दृष्टि
The Vision

...ship Program
Mukherjee ...agar

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-1)

DTVF / OPT-24 **HL-2401**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): आनंद कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): [illegible] 12 [illegible]

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	5	6	6	3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)*	पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)*

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

राष्ट्रभाषा किसी भी देश में सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा का दर्जा प्राप्त किए होती है, वहीं राजभाषा किसी देश के शासन प्रणाली की आधिकारिक भाषा होती है।

राजभाषा	राष्ट्रभाषा
① यह अनौपचारिक भाषा होती है	① यह औपचारिक भाषा होती है
② सामान्यत: पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है	② इसमें लोकप्रचलित शब्दों का प्रयोग होता है
③ स्वदेशी या विदेशी दोनों हो सकती है यथा - ब्रिटिश काल में अंग्रेजी भाषा।	③ यह हमेशा स्वदेशी भाषा ही होती है
④ यह राजभाषा में सुधार ऊपर से थोपे	राष्ट्रभाषा में सुधार या परिवर्तन स्वत:

Copyright – Drishti The Vision Foundation

राजभाषा	राष्ट्रभाषा
जाते हैं	स्फूर्त होते हैं।
⑤ देश की लोकसंस्कृति के [illegible] द्वारा [illegible] में सक्षम नहीं होती है	⑤ देश की लोक-संस्कृति यथा त्यौहार उत्सव इत्यादि में राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग होता है
⑥ मुख्यतः कार्यालयों में प्रयुक्त होती है	⑥ आम जनजीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रयुक्त होती है
⑦ इसमें सुधार किसी समिति द्वारा सुझाए जाते हैं।	⑦ इसमें सुधार समय के अनुरूप आवेशित हो जाते हैं

इस प्रकार राजभाषा जहाँ सरकारी तंत्र की भाषा बनकर अपनी भूमिका निभाती है वहीं जनता अपनी भावनाओं, मूल्यों एवं विचारों को राष्ट्रभाषा में व्यक्त करती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रज भाषा शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित भाषा है जिसका आरंभिक उल्लेख अमीर खुसरो की 'खालिकबारी' में मिलता है

ब्रज भाषा का विकास क्रम

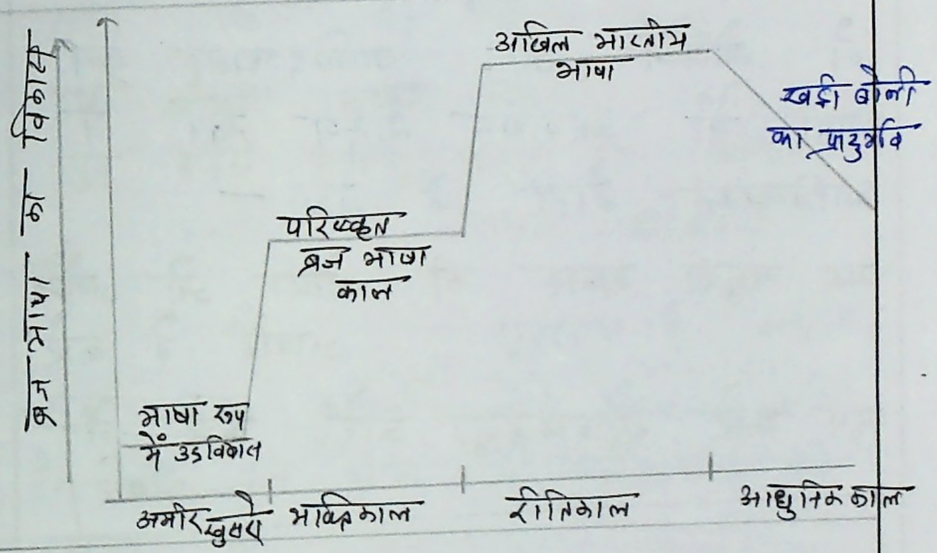

मध्यकाल में ब्रजभाषा का विकास मुख्यतः कृष्ण भक्त कवियों ने किया जिनमें सूरदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास ने अपने पदों में कृष्ण की मनोहर झाँकियों को ब्रज भाषा में मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है।

जब कृष्ण गोपियों को छोड़कर मथुरा चले जाते हैं तो गोपियों की वाग्विदग्धता ब्रज भाषा में अत्यधिक तीक्ष्ण रूप में अभिव्यक्त होती है यथा —

'यह मथुरा काजर की कोठरी, जो आवैं जावैं ते कारे।
तुम कारे सुफलकसुत कारे, कारे मैन भँवारे।"

इसी तरह सूरदास जी ने ब्रज भाषा में प्रकृति को भी कृष्ण विरह में शामिल किया है यथा-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

" हे मधुबन तुम कत रहत हरे
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाड़े क्यों न जरे।"

इसके साथ, सूरदासजी ने भक्ति काव्य में निर्गुण उपासना पर कटाक्ष करने के लिए भी ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। यथा —

" ऊधो! कोकिल कूजत कानन,
तुम हमको उपदेश करत हो, भस्म लगावत आनन।"

सूरदास के अतिरिक्त अन्य कृष्ण कवियों जैसे नंददास आदि ने भी ब्रज भाषा में शिष्ट-साहित्य की रचना की।

इसके बाद रीतिकाल में घनानंद ने सुजान विरह में ब्रज भाषा का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत किया। किंतु, ब्रज भाषा को अखिल भारतीय भाषा का दर्जा दिलाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मैं सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका कवि बिहारी की 'बिहारी सतसई' ने निभाई। बिहारी ने संयोग श्रृंगार के लिए जो दोहे रचे वे ब्रज भाषा की लोकप्रियता का कारण बने एक ही पंक्ति में अनेक अनुभावों की अभिव्यक्ति उनके दोहों में दिखती है यथा-

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात,
भरे भौन में करत है नैनन सों बात।"

बिहारी ने ब्रजभाषा में व्यंग्य को भी अनुपम अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसी संदर्भ में कहा गया है कि-

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर।"

इस प्रकार मध्यकाल में भक्तिकाल व रीतिकाल के कवियों ने ब्रज भाषा परिनिष्ठित भाषा का दर्जा प्रदान करवाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है जिसके गुण सिद्ध-नाथ साहित्य से लेकर अमीर खुसरो की पहेलियों तक दिखते हैं।

इसी विकास क्रम में विभिन्न संत कवियों ने खड़ी बोली के परिमार्जन में भूमिका निभाई है।

संत कवियों में खड़ी बोली का सर्वोत्कृष्ट रूप कबीर की बानी में दिखता है। यथा-

"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे खुद भी शीतल होय।"

लेकिन कबीर के अतिरिक्त अन्य कवियों का योगदान भी इस संदर्भ में कम नहीं है। विशेषतः रैदास, मलूकदास जैसे संत कवि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वप्रथम, ~~कव~~ संत कवि मलूकदास ने सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों का विरोध करने के ~~लिए~~ साथ निर्गुण भक्ति का प्रचार करने हेतु खड़ी बोली का प्रयोग किया। यथा-

कहत मलूका निरगुण के गुण कोई
बड़भागी गावै।

उपरोक्त पंक्ति में 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग एवं आकारांतता की प्रवृत्ति (मलूका) खड़ी बोली के समान ही है।

इसी तरह संत कवि रविदास (रैदास) ने भी भक्ति साहित्य एवं सामाजिक चेतना से भरपूर साहित्य की रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग किया है यथा-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जाति ओछा, पाति ओछा, ओछा जनम हमारा।
राम नाम की सेवा कीन्ही कहे रैदास चमारा।।"

उपरोक्त दोहे में आकारांतता (हमारा, चमारा) की प्रवृत्ति, 'की' परसर्ग का प्रयोग इत्यादि विशेषताएँ वर्तमान खड़ी बोली के समान ही है।

इस प्रकार कहना न होगा कि कबीरेतर संत कवियों ने भी खड़ी बोली के परिमार्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि आज की खड़ी बोली पद्य एवं गद्य दोनों रूपों में अपना वर्चस्व बनाए हुए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौरान आन्ध्रप्रदेश राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) खड़ी बोली के उदय एवं विकास में कौन-से तत्त्व सक्रिय रहे हैं? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है जिसका मुख्य क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि है।

यूँ तो खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप, अमीर खुसरो के साहित्य में ही इतने परिष्कृत रूप में दिखता है कि आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा कि – "क्या भाषा उस समय बिलकुल इतनी निखरी हो गई थी कि जैसी अमीर खुसरो की पहेलियों में दिखती है।" लेकिन खड़ी बोली को भाषा के रूप में स्थापित करने में अनेक कारकों ने योगदान दिया है जिन्हें निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सर्वप्रथम, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से गद्य का विकास होने लगा था और ब्रज भाषा गद्य साहित्य जैसे नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम नहीं थी। उदाहरण: भारतेंदु ने अपने नाटक (जैसे- भारत दुर्दशा) गद्य में ही लिखे। किंतु, पद्य के रूप में अभी भी ब्रज भाषा की कोमलकांत शब्दावली व भाषा का प्रयोग हो रहा था क्योंकि खड़ी बोली भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में सक्षम नहीं थी।

इसी समस्या को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' की रचना कर एक हद तक खत्म कर दिया। 'भारत-भारती' में खड़ी बोली का जो परिमार्जित रूप गुप्तजी ने प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया उसी आधार पर भावनाओं के तीव्र उच्छलन वाला छायावाद का वृक्ष खड़ा हो सका।

साथ ही, प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना ने साहित्य को सुनने की अपेक्षा पढ़ने का माध्यम बना दिया। इसके कारण अब विदेशी साहित्य भी अनुवादित रूप में भारत में प्रकाशित होने लगा। प्रिंटिंग हेतु खड़ी बोली अधिक उपयुक्त भाषा थी।

इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश शासन ने भी प्रशासनिक कार्यों में खड़ी बोली हिंदी को ही भाषा के रूप में चुना। न्यायिक से लेकर राजस्व संबंधी सभी कार्य खड़ी बोली हिंदी में होने लगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उर्दू के समकक्ष ईलाई मिशनरियों ने भी खड़ी बोली के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1813 ई. के अधिनियम के द्वारा इन मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार करने की अनुमति दी गई और इन मिशनरियों ने 'बाइबिल' का अनुवाद खड़ी बोली में ही किया।

अंत में स्वतंत्रता संघर्ष में राष्ट्रीय मूल्यों को प्रचारित करने हेतु विभिन्न समाचार-पत्र एवं मासिक पत्रिकाओं ने जनग्राह्यता हेतु खड़ी बोली को ही माध्यम के रूप में चुना।

इस प्रकार खड़ी बोली का उदय एवं विकास विभिन्न प्रशासनिक, राजनीतिक, साहित्यिक एवं धार्मिक कारकों से प्रभावित रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदानपर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी उत्तर प्रदेश के अवध प्रदेश में प्रचलित भाषा है जिसके विकास में सूफी काव्यधारा एवं रामभक्ति काव्यधारा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

तेरहवीं - चौदहवीं शताब्दी में ही भारतीय कथाओं को आधार बनाकर प्रेमाख्यान काव्य लिखे जाने लगे थे। इन सूफी कवियों ने अपने साहित्य की जनग्राह्यता बढ़ाने के लिए ~~लोकप्रचलित~~ लोकप्रचलित ठेठ अवधी भाषा को चुना। इसमें कुतुबन की 'मृगावती' सर्वप्रथम लोकप्रिय हुई।

किंतु, अवधी को सर्वाधिक ~~प्रसिद्ध~~ लोकप्रियता मलिक मुहम्मद जायसी ने दिलवायी। इन्होंने अवधी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में चौदह ग्रंथों की रचना की, जिसमें 'पद्मावत' सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है।

जायसी ने पद्मावत में तद्भव आधारित अवधी की अभिव्यक्ति दी है। इसमें 'क' जोड़कर तद्भव शब्दों का अवधीकरण किया गया। यथा -

इसी के साथ पद्मावत में लोकसंस्कृति को प्रस्तुत करने वाले शब्दों का अवधी में समावेशन किया गया। यथा 'दवँगरा' शब्द जो कि मानसूनी वर्षा की पहली बौछार को दर्शाता है।

वहीं दूसरी ओर, जायसी ने अवधी में अरबी-फारसी, तुर्की के विदेशज शब्दों को भी शामिल किया जिसके कारण अवधी की शब्द विविधता में विस्तार हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जायसी ने अवधी में जो मिठास घोली है उसके लिए आचार्य शुक्ल ने कहा है-
"जायसी की भाषा मधुर है पर इसका माधुर्य निराला है। अवधी की इस बेमेल खालिस मिठास के लिए जायसी का नाम बराबर लिया जाएगा।"

जायसी की अवधी की मिठास निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है-

"यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव,
मकु तेहि मारग उड़ी परै, कंत धरै जहँ पाँव।"

जायसी के अलावा नूर मुहम्मद जैसे ~~अन्य~~ सूफी कवियों ने भी अवधी को परिमार्जित किया है। 'अनुराग बाँसुरी' इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार कहना न होगा कि सूफी काव्यधारा ने ठेठ अवधी को 'लोकभाषा' के स्तर से उठाकर 'शिष्ट-साहित्य' की भाषा के शिखर पर स्थापित किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर | 79
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) लोकमंगल की अवधारणा को प्रसारित करने में अवधी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रज भाषा में जहाँ संयोग एवं वियोग शृंगार की अभिव्यक्ति माधुर्यपूर्ण तरीके से हुई है वहीं अवधी ने लोकमंगल की अवधारणा को स्थापित एवं प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लोकमंगल की अवधारणा के संदर्भ में विश्व के श्रेष्ठतम महाकाव्यों में से एक 'रामचरितमानस' एवं 'पद्मावत' का ~~योगदान~~ योगदान महत्वपूर्ण है।

एक तरफ सूफी काव्यधारा में जायसी ने 'पद्मावत' में जहाँ 'प्रेम को बैकुंठ' के स्तर पर स्थापित कर लोकमंगल हेतु प्रेम मार्ग प्रस्तावित किया है। जायसी लिखते हैं—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"मानुष प्रेम भए बैकुंठी, नाहीं तो काह
छार एक मूँठी।"

इसके अलावा, जायसी ने सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निंदा, आदि काव्य रूढ़ियों का प्रयोग करके भी लोकमंगल की अवधारणा को मजबूत किया है।

साथ ही 'पद्मावत' के 'जौहर' में जहाँ उच्च वैयक्तिक मूल्यों का दिखाया है तो वहीं दूसरी ओर नागमती के रूप में पारंपरिक भारतीय नारी का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है।

किंतु, लोकमंगल की अवधारणा में सर्वोत्कृष्ट प्रतिमान गोस्वामी तुलसीदास ने रखे गए हैं। 'रामचरितमानस' में तुलसी ने 'रामराज्य' की अवधारणा प्रस्तुत कर लोकमंगल का एक आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं—

"दैहिक, दैविक भौतिक तापा,
राम राज्य काहुहि नहीं व्यापा।"

Copyright – Drishti The Vision

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी तरह तुलसी लिखते हैं कि रामराज्य के अभाव में जनता त्रस्त रहती है जैसे-

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
बणिज को न वणिक न चाकर को चाकरी
जिविकाविहीन लोग सीद्यमान सोच बस, कहैं एक एकन सौं कहाँ जाई का करी।"

इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने निर्गुण व सगुण, शैव व वैष्णव, हिंदू-मुसलमान आदि में समन्वय कर भावी पीढ़ियों के लिए लोकमंगल के प्रतिमान गढ़े हैं। यथा-

"अगुनहिं - सगुनहिं नहीं कुछ भेदा।"
"शिवद्रोही मम दास कहावा"

कहना न होगा कि समूची भारतीय परंपरा में लोकमंगल का जैसा काव्य अवधी में रचा गया है शायद ही किसी भाषा में रचा गया हो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 ई-मेल: help@groupdrishti.in वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation